वर्ग – 6

विषय – हिन्दी

पाठ – 1

मेरा देश (कविता)

ऊँचा खड़ा हिमालय आकाश चूमता है ;

नीचे पखार पग - तल , नित सिंधु झूमता है ।

गंगा पवित्र यमुना , नदियाँ लहर रही हैं ;

पल - पल नई छटाएँ , पग - पग छहर रही हैं।

वह पुण्यभूमि मेरी ,

वह जन्मभूमि मेरी ।

वह स्वर्णभूमि मेरी ,

वह मातृभूमि मेरी !

झरने अनेक झरते , जिसकी पहाड़ियों में ,

चिड़ियाँ चहक रही हैं , हो मस्त झाडियों में ,

अमराइयाँ घनी हैं , कोयल पुकारती है ,

बहती मलय पवन है , तन मन सँवारती हैं।

वह धर्मभूमि मेरी ,

वह कर्मभूमि मेरी ।

वह जन्मभूमि मेरी ,

वह मातृभूमि मेरी !

जन्मे जहाँ थे रघुपति , जन्मी जहाँ थीं सीता ,

श्री कृष्ण ने सुनाई वंशी पुनित गीता ।

गौतम ने जन्म लेकर जिसका सुयश बढ़ाया ,

जग को दया दिखाई , जग को दिया दिखाया ।

वह युद्धभूमि मेरी ,

वह बुद्धभूमि मेरी ।

वह जन्मभूमि मेरी ,

वह मातृभूमि मेरी !

रचनाकार

सोहनलाल द्विवेदी

नोट :- इस कविता को पढ़े एवं कण्ठस्थ करें ।

विषय शिक्षिका – भारती कुमारी

दिनांक - 31 / 03 / 2020